# ये अव्यक्त इशारे

## महान बनने के लिए मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

**1)** मधुरता के गुण को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण हर बच्चे में होना चाहिए। मधुरता की मधु जिनके साथ है उन्हें हर कार्य में सफलता ही सफलता है। उनके जीवन से असफलता मिट जायेगी।

**2)** मधुरता का गुण जीवन में तब आयेगा जब अपनी वा दूसरे की बीती को न देख अन्दर के संस्कारों को सरल व नम्रचित बनायेंगे। सरलचित आत्मा का गुण है ही मधुरता। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। मधुरता और नम्रता, इन दो विशेष धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

**3)** वाचा में सदा सत्यता और मधुरता हो तो वाणी की मार्क्स जमा होती रहेंगी। मधुरता का गुण जीवन में है तो हर बोल मोती समान होंगे। ऐसे लगेगा जैसे बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। वे ऐसा बोल बोलेंगे जो सुनने वाले सोचेंगे कि ऐसा बोल हम भी बोलें। सबको सुनकर सीखने की, फालो करने की प्रेरणा मिलेगी। ऐसे मधुर बोल का वायब्रेशन सर्व को स्वत: ही खींचता है।

**4)** आप महान आत्माओं का हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो। जैसे बाप का स्वभाव सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का है, हर एक को ऊंचा उठाने का, मधुरता और निर्माणता का है। ऐसे अपना स्वभाव बनाओ। अगर तेज़ बोलने का, आवेश में आने का स्वभाव है तो यह भी ब्राह्मण जीवन में बहुत बड़ा विघ्न है। अब ऐसे स्वभाव का परिवर्तन करो।

**5)** जैसे मीठा खाने और खिलाने से थोड़े समय के लिए मुख मीठा होता है, खुश होते हैं। ऐसे स्वयं ही मीठा बन जाओ तो सदा ही मुख में मधुर बोल रहेंगे। ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करेंगे, दूसरे को भी खुश करेंगे। इसी विधि से सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।

**6)** किसी भी आत्मा को दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल दो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। यह दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल देंगे। दो मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे।

**7)** मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। आप सभी को बदलने का आधार बाप के दो मधुर बोल हैं। मीठे बच्चे तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोल ने ही बदल दिया। मीठी दृष्टि ने बदल दिया। ऐसे ही मधुरता द्वारा औरों को भी मधुर बनाओ। यह मुख मीठा करो। सदा इस मधुरता की सौगात को साथ रखो। इसी से सदा मीठा रहेंगे और मीठा बनायेंगे।

**8)** मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराओ। आपके संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता हो - यही बाप की समीपता है इसलिए बाप भी रोज़ कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चों' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाबा'। यही रोज़ का मधुरता का बोल मधुर बना देता है।

**9)** मधुरता और नम्रता का गुण झुकना सिखाता है। जितना अभी आप संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। संस्कार में भी झुकना। यह संकल्प भी न हो दूसरे हमारे आगे भी तो कुछ झुकें! हम झुकेंगे तो सभी झुकेंगे। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं वह जब सभी के आगे झुकेंगे तब सेवा कर सकेंगे।

**10)** मधुरता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। जहाँ मधुरता है वहाँ पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। जितना बुद्धि में नशा हो, उतना ही कर्म में नम्रता और बोल में मधुरता हो। ऐसे नशे में रहने से कभी नुकसान नहीं होगा। सिद्धि को पाने वाले, स्वयं को नम्रचित्त, निर्माण, हर बात में अपने आपको गुणग्राहक और मधुरता सम्पन्न बनायेंगे।

**11)** आपका बोल और स्वरूप दोनों साथ-साथ हों – बोल स्पष्ट भी हों, उसमें स्नेह भी हो, नम्रता और मधुरता भी हो। सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – जब इन दोनों बातों का बैलेन्स हो तब कमाल दिखाई देगी। फिर आपके शब्द कड़े नहीं, मीठे लगेंगे।

**12)** अगर आप से कोई टक्कर लेता है तो आप उसे अपने स्नेह का पानी दो, आप अपने मधुरता और नम्रता के गुण को नहीं छोड़ो। नम्रता की ड्रेस पहनकर रहो। यह नम्रता ही कवच है, जो

सेफ्टी का साधन है। संस्कारों की रास मिलाने का सबसे सहज तरीका है – स्वयं नम्रचित और मधुरता सम्पन्न बन जाओ, दूसरे को श्रेष्ठ सीट दे दो।

**13)** नम्रचित आत्मा सहज ही सुखदाता बन सकती है लेकिन अभिमान नम्रचित बनने नहीं देता। नम्रचित नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। सेवाधारी की विशेषता सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। जितना नम्रचित होंगे उतना निर्माण करेंगे। जहाँ निर्मानता होगी वहाँ रोब नहीं होगा, रुहानियत होगी। जैसे बाप कितना नम्रचित बनकर आते हैं, ऐसे फालो फादर।

**14)** संगठन में सफलता प्राप्त करने के लिए सदा नम्रचित्त के तख्त पर विराजमान रहो। इसी तख्त पर बैठ, ज़िम्मेवारी का ताज धारण कर भविष्य की पदवी बनाओ। तख्त से उतरना नहीं, इसी पर बैठकर काम करो तो सफलता मिलती रहेगी। इसके लिए 'पहले आप' का पाठ पक्का हो, इससे आपके संस्कार सबके साथ सहज ही मिल जायेंगे।

**15)** मधुरता ही महानता है, इससे मन और मुख का कडुवापन समाप्त हो जाता है। क्रोध अग्नि शीतल हो जाती है। बापदादा अपने हर बच्चे को शीतल देवता बनाना चाहते हैं इसलिए मधुरता के गुण को धारण करो। आपका मुखड़ा भी मीठा हो। मधुरता के गुण से भरपूर बनो, जो भी सम्पर्क में आये उसे मधुर बोल वा शक्तिशाली दृष्टि से भरपूर करो।

**16)** आप बच्चों की चलन में मधुरता और मन्सा में बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। दोनों स्मृति रहे तो पास विद आनर्स बन जायेंगे। मधुरता और नम्रता इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी, महादानी, वरदानी बन जायेंगे और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

**17)** आपका हर बोल महान हो। हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो। हर एक को ऊंचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव, निर्माणता का स्वभाव हो। मेरा स्वभाव ऐसा है, यह कभी नहीं बोलना। मेरा कहाँ से आया! मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। स्वभाव के वश होना यही माया है। अब मायाजीत बनो। अभिमान वा दिलशिकस्त होने के, ईर्ष्या वा आवेश में आने के स्वभाव का परिवर्तन करो।

**18)** जब एक दो को मीठा खिलाते हो उसमें मुख थोड़े समय के लिए मीठा होता है लेकिन स्वयं ही मीठा बन जाओ, मुख में सदा ही मधुर बोल रहें। जैसे मीठा खाने और खिलाने से खुश होते हो ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करते, दूसरे को भी खुश कर देते। इससे सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म हो।

**19)** बापदादा अब एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। रूहानियत से चमकते हुए नयन देखने चाहते हैं, बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं और कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं।

**20)** संस्कार वा नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार, मोल्ड कर लेने वाला। इज़ी माना अलबेला नहीं।

**21)** ब्रह्मा बाप अपने हर बच्चे के चेहरे पर, एक तो सदा रूहानियत की मुस्कराहट देखना चाहते हैं और दूसरा - मुख से सदा मधुर बोल सुनना चाहते हैं। एक शब्द भी मधुरता के बिना नहीं हो। चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो, यही पालना का रिटर्न दो।

**22)** आपके हर बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो। ब्राह्मण आत्माओं के बोल साधारण बोल न हो। यही महानता और यही नवीनता है। मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा दूसरों का भी मुख मीठा कराते रहो। ''सदा अथक भव और मधुर भव'' के वरदानों से बढ़ते, उड़ते चलो।

**23)** जैसे ब्रह्मा बाप के बोल फरिश्तों के बोल, कम बोल और मधुर बोल थे। ऐसे यथार्थ बोल बोलो। कारोबार के लिए बोलना पड़ता है लेकिन वह भी लम्बा नहीं करो। हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर करो। हर बोल में मधुरता, नम्रता की महानता हो। इसके लिए स्वयं को निमित्त समझकर हर कार्य करो तब महानता के साथ नम्रता आयेगी और सफलतामूर्त बनेंगे।

**24)** आपका एक एक बोल अलौकिक हो, फरिश्तों के समान हो। हर बोल मधुर हो। इस बात पर अभी अन्डरलाइन करो तब प्रत्यक्षता होगी क्योंकि अभी तक वाणी की शक्ति व्यर्थ जा रही है, इसलिए वाणी में जो बाप को प्रत्यक्ष करने का जौहर वा शक्ति होनी चाहिए वह कम है, वाचा को व्यर्थ से बचाओ तो बाप को प्रत्यक्ष करने का आवाज बुलन्द होगा।

**25)** जैसे अन्जान बच्चा नुकसान वाली चीज़ को खिलौना समझता है तो उसे कुछ देकर छुड़ाना पड़ता है, ऐसे जो अल्पकाल का मान शान वा अल्पकाल की इच्छा रखते हैं, उन्हें मान देकर स्वयं निर्मान बन जाओ। उस समय यदि उन्हें शिक्षा देंगे तो टकराव पैदा होगा इसलिए ऐसे समय पर युक्तियुक्त चलन से, परोपकारी बन क्षमा भाव से सम्मान देकर पहले उन्हें समझदार

बनाओ, जिससे वह स्वयं महसूस करे कि यह बात नुकसानकारक है।

**26)** कोई भी चीज़ को गर्म कर नर्म किया जाता है, फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ भी गर्माई है शक्ति रूप और नर्माई है निर्मानता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही नम्रचित रह सकता है। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे, न नम्रचित। शक्तिरूप में है मालिकपन और नम्रता में है सेवा का गुण। तो जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

**27)** जो सरलचित हैं वही मधुरता के गुण सम्पन्न हैं, वही सदा हर्षित रहते हैं। हर्षितचित हैं तो सबको आकर्षित करते हैं। हर्षित का अर्थ ही है अतीन्द्रिय सुख में झूमना। ज्ञान का सुमिरण करते, अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते अतीन्द्रिय सुख में झूमना, इसको कहा जाता है हर्षित। ऐसा जो हर्षित रहता है वही आकर्षित करता है।

**28)** किसके संस्कार सरल, मधुर होते हैं तो वह संस्कार स्वरूप में आते हैं। जब संस्कार बापदादा के समान बन जायेंगे तो बापदादा के स्वरूप सभी को देखने में आयेंगे। जैसे बापदादा वैसे हूबहू वही गुण, वही कर्तव्य, वही बोल, वही संकल्प अनुभव होंगे। सभी के मुख से निकलेगा यह तो वही लगते हैं।

**29)** ऐसे नहीं समझो कि हम तो सदैव झुकते ही रहते हैं लेकिन हमारा कोई मान नहीं, जो झुकते नहीं व झूठ बोलते हैं उनका ही मान है–नहीं। यह अल्पकाल का है, लेकिन आप दूरादेशी बुद्धि रखो, यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे, तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें आगे आगे नमन करेंगी। सतयुग त्रेता में राजा के रिगार्ड से काँध से नहीं लेकिन मन से झुकेंगे और द्वापर कलियुग में काँध झुकायेंगे।

**30)** मैजारिटी के सामने सर्विस में बाधा डालने वाला मुख्य विघ्न आता है – मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ... यह मैंपन आना इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान, इन रूपों में ही विघ्न आते हैं। इस प्रकार के विघ्नों को समाप्त करने के लिए सदा एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्रचित, नि:संकल्प अवस्था में रह सकते हैं, यही धारणायें वायुमण्डल को निर्विघ्न बना देती हैं।

# (त्रिमूर्ति दादियों के अनमोल वचन - रिवाइज क्लासेस)

*शिवबाबा याद है ?* *ओम् शान्ति* 20-03-2026 *मधुबन*

## "अपने मन पर पूरा कन्ट्रोल रखो तो लोगों को आपसे लाइट का साक्षात्कार होगा और उनके व्यर्थ संकल्प समाप्त हो जायेंगे"

**गुल्जार दादी जी 23-11-11**

समर्पण का अर्थ क्या होता है? समर्पित माना सब कुछ अर्पित। हमने सब-कुछ बाबा के अर्पण कर दिया। बाबा ने मुख्य बात कही कि आजकल सबसे ज्यादा तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वही खत्म होने चाहिए। तो यह किसने चेकिंग की कि व्यर्थ संकल्प चलते हैं या खत्म हो गये हैं? जो समझते हैं हमारे व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं वो हाथ उठाना। व्यर्थ संकल्प माना कोई बुरे नहीं हैं, लेकिन जितना सोचना चाहिए उससे ज्यादा कोई भी बात की डीप में जाते हैं, तो वो भी व्यर्थ हुआ ना। बाकी बुरे संकल्प, वो अलग चीज़ हैं लेकिन जो हमारे सोचने की बात नहीं है और वही सोच चल पड़ता है तो वो भी तो व्यर्थ हुआ ना। उस व्यर्थ संकल्प से टाइम भी व्यर्थ जाता है।

तो बाबा ने जो काम दिया है वो होना चाहिए क्योंकि बाबा ने कहा है अन्त में ऐसी बातें आयेंगी जो आपको फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा यानि ज्यादा टाइम सोचने में न चला जाए। एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा क्योंकि अन्त के समय मनुष्यों की बुद्धि बहुत खराब होगी, और यह जो भटकती हुई आत्मायें जिन्न भूत हैं, वो भी बहुत ज्यादा अपना वार करेंगे, सबकी अन्तिम घड़ी होगी, तो अन्तिम घड़ी में जैसे जोश आता है हम करके ही देखें। तो वो तो होगा ही इसलिए बाबा ने एक दृश्य दिखाया था कि एक कुमारी योग में बैठी है और खराब संकल्प वालों की दृष्टि वृत्ति उसके ऊपर पड़ती है, वह उसी वृत्ति से उसके आगे आगे आ रहे हैं। तो जैसे वो आगे आगे बढ़े वैसे उनको कुमारी के बजाए लाइट ही दिखाई दी। कुमारी दिखाई नहीं दी एकदम लाइट दिखाई दी, तो वो डर गये और उनका संकल्प स्टॉप हो गया। तो बाबा कहते हैं अन्त में ऐसी अनेक बातें आयेंगी, उसमें आपको बिल्कुल ही लाइट रूप होना पड़ेगा। कोई किसी भी